IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.301
Volume 3, Issue 2, September 2023

''नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में बनते–बिगड़ते रिश्तों का दंश''

डॉ. ऋचा शुक्ला
क्यू–114, शिवालिक नगर, बी. एच. ई. एल. हरिद्वार उत्तराखण्ड –249403

सारांश :–

विभिन्न मुद्दों पर अपनी कलम चलाने वाली प्रसिद्ध और सम्मानीय लेखिका नासिरा शर्मा ने नारी मन की विभिन्न परतों को, पीड़ाओं को न सिर्फ समझा, बल्कि उनका हल भी प्रस्तुत करने का यथा संभव प्रयास भी किया। नासिरा शर्मा नारी जीवन की जटिलताओं को बखूबी समझती है और नारी के आत्मसम्मान उसके अस्तित्व के लिए कलम भी उठाती है। कुमार पंकज के शब्दों में, ''नासिरा शर्मा उन रचनाकारों में हैं जिन्होंने महिला मुद्दों को अपनी कलम का निशाना बनाया है। यह सच है कि महिला के दर्द को महिला से बेहतर भला कौन जान सकता है।''[1] नासिरा शर्मा नारी को मानवीय रूप में प्रस्तुत करती है। नासिरा जी भौगोलिक सीमा से परे जाकर नारीमन की परत–दर–परत टोह लेती है।

मूल शब्दः– रिश्तों का दंश, कथा साहित्य, नासिरा शर्मा, संबंध पारिवारिक संबंध, पितृसत्तात्मक, स्त्री–पुरुष, शाल्मली, महरुख, आदि।

संदर्भ स्रोतः–

[1]. कुमार, पंकज, जिन्दगी के असली चेहरे, आजकल पत्रिका।
[2]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 130
[3]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 26
[4]. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, पृ.सं. 125
[5]. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मँगनी, पृ.सं. 116
[6]. शर्मा, नासिरा, खुदा की वापसी, पृ.सं. 30
[7]. शर्मा, नासिरा, ठीकरे की मँगनी।